thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 3
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
5 नव. से 21 नव. 2014 तक
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115
मुख्य सम्पादक :
पं. अमरसिंह आर्य
सम्पादक
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती , सीकर
श्री ओम मुनि , ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाइपास , जयपुर
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स :
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
dr.sudhrisharma@yahoo.com
एक प्रति मूल्य : 5 रूपया
सहायता शुल्क : 100 रूपया

सम्पादकीय

स्वच्छ एवं निर्मल भारत के निर्माण का संकल्प लें

वर्तमान में हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान एवं भारत सरकार के सद्प्रयासों से इन दिनों सर्वत्र सफाई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। विभिन्न संस्थायें एवं व्यक्तियों के इस कार्यक्रम से जुड़ने की सूचनाएं नित्य प्रति समाचार पत्रों में पढ़ने को मिल रही हैं। यहां यह प्रश्न भिन्न है कि इस देश के कितने नागरिक इसे अपना कर्त्तव्य समझकर प्रेरित हो रहे हैं । जहां तक आर्य समाज की चिन्तन परम्परा का प्रश्न है,'संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है और संसार का उपकार मन, वचन एवं कर्म की शुद्धता के बिना सम्भव नही है। ईश्वर ने मानव के कल्याण के लिए ऋषिओं के हृदय में पवित्र वैदिक ज्ञान का प्रकाश किया है। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष वेदों की ओर लौटने का उद्घोष प्रस्तुत कर स्वयं ने सम्पूर्ण जीवन मानव के कल्याण के लिए अर्पित कर दिया । वेद समस्त प्रकार की स्वच्छता के लिए अतिसूक्ष्मता से उपदेश करते हैं । यथा –

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।।
मधु नक्तंमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।।
मधुमान्नो वनस्पर्तिमधुमॉ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।।

ऋग्वेद – 1.90.6–8

हे परमपिता परमात्मा ! संसार में वायु मधुर बहे, नदियॉ मधुर बहें, औषधियॉ मधुर हों और हमारा पिता द्यौ मधुर हो। वनस्पतियॉ मधुर हों। सूर्य मधुर हो और गायें मधुर हों ।

उक्त मन्त्रों के माध्यम से वैदिक ऋषियों ने स्वच्छ एवं निर्मल परिमण्डल की अभिलाषा की है, जिसमें उनके द्वारा पृथिवी, जल, तेज, वायु,और आकाश इन सभी पदार्थों के सन्तुलन की परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है। वर्तमान स्वच्छता के प्रसंग में उक्त मन्त्रों की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है ।

मनुष्य के कर्म एवं वैचारिक कलुषिता के कारण ही आज सम्पूर्ण विश्व में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। आज प्रदूषण को विश्व की सबसे बड़ी, सबसे गहन एव ज्वलन्त समस्या के रूप में देखा और समझा जा रहा है । ''कटते वन और बढ़ते जन'' सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व के समक्ष प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं । पर्यावरण को शुद्ध एवं संतुलित बनाये रखने का उपक्रम जटिलतर होता जा रहा है। वर्तमान में यह समस्या भयावह रूप धारण कर चुकी है। ओजोन परत का निरन्तर क्षरण होना , भूमण्डलीय उष्मण (Global Warming), भूजल स्त्रोतों में न्यूनता, फैलते रेगिस्तान, सिकुड़ते वन, नष्ट होती पशु–पक्षी–सम्पदा, प्रदूषित नदियां सभी यही व्यञ्जित कर रहे हैं कि कदाचित सर्वनाश निकट है।

ऐसे में हम सभी नागरिकों का यह परम कर्त्तव्य है कि हम अपने परिवेश को शुद्ध एवं स्वच्छ रखने के लिए सर्वदा यत्नशील रहें । किसी भी कार्य की शुरूआत स्वयं से होती है । अतः देश के प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ एवं निर्मल भारत के निर्माण हेतु कृतसंकल्प होकर राष्ट्रधर्म का निर्वहन करना चाहिए ।

– डॉ. सुधीर शर्मा

माता और पिता आठ-आठ वर्ष के पुत्र व कन्याओं को विद्याभ्यास, ब्रह्मचर्य-सेवन और अच्छी शिक्षा किये जाने के लिये विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को सौंप दें। वे भी विद्या-ग्रहण करने में नित्य मन लगावें और पढ़ाने वाले भी विद्या और अच्छी शिक्षा देने में नित्य प्रयत्न करें।

thearyasamaj.org

बैटरी निर्माण-विधि के आविष्कारक महर्षि अगस्त्य

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में अपने अमूल्य योगदान के कारण भारत को विश्व गुरू की उपाधि से विभूषित किया जाता है। गुरू वही हो सकता है, जिसके पास ज्ञान उनके शिष्यों से पूर्व हो , वही ज्ञान का प्रथम प्रसारक अर्थात् गुरू बन सकता है। आज विज्ञान और समृद्धि का पर्याय बन चुके पश्चिमी सभ्यता वाले राष्ट्र जब कपड़े पहनना भी नहीं जानते थे , उस समय हम परमाणु बमों का प्रयोग करते थे, विमानों में उड़ा करते थे। कालान्तर में यह विद्या भारत से ही पूरे विश्व में फैली है । इसलिए भारत को 'विश्वगुरू' कहा जाता था । इस सन्दर्भ में हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के काल में अर्थात् आज से लाखों साल पूर्व महर्षि अगस्त्य द्वारा रचित "अगस्त्य संहिता" के आधार पर यह प्रमाणित है कि उस समय बैटरी का निर्माण हो चुका था । सामान्यतः हम मानते हैं कि विद्युत बैटरी का आविष्कार बेंजामनि फ्रैंकलिन ने किया था, किन्तु आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा की बैटरी के बारे में सर्व प्रथम एक भारतीय ने बताया। अगस्त संहिता में महर्षि अगस्त्य ने बैटरी निर्माण की विधि का वर्णन किया था। अगस्त्य संहिता में सूत्र प्राप्त होते हैं।

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतकम् ।
छादयेच्छिखिग्रीवने चाद्राभिः काष्ठापांसुभिः।।
दस्तालोष्टो निधात्वयः पारदाच्छादितस्त तः।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरूणसंज्ञतिम् ।।

अर्थात् एक मिट्टी का बर्तन लें, उसमें अच्छी प्रकार से साफ किया गया ताम्रपत्र और शिखिग्रीवा (मोर के गर्दन जैसा पदार्थ अर्थात् कॉपरसल्फेट) डालें। फिर उस बर्तन को लकडी के गीले बुरादे से भर दें। उसके बाद लकडी के गीले बुरादे के ऊपर पारा से आच्छादित दस्तलोष्ट (Mercury-Amalga mated Zinc Sheet) रखें। इस प्रकार दोनों के संयोग से अर्थात् तारों के द्वारा जोडने पर मित्रावरूण शक्ति की उत्पति होगी। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि यह प्रयोग करके भी देखा गया है जिसके परिणामस्वरूप 1.138 वोल्ट तथा 23 ma धारा वाली विद्युत उत्पन्न हुई। स्वदेशी विज्ञान संशोधन संस्था (नागपुर) के द्वारा उसके चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन में 7 अगस्त, 1990 को इस प्रयोग का प्रदर्शन भी विद्वानों तथा सर्वसाधारण के समक्ष किया गया। अगस्त्य संहिता में आगे लिखा है:

अनेन जलभंगोस्ति प्राणो दानेषु वायुषु।
एवं शतानां कुंभानांसंयोगकार्यकृत्स्मृतः।।

अर्थात सौ कुम्भों (उपरोक्त प्रकार से बने तथा श्रृंखला में जोडे गए सौ सेलों) की शक्ति का पानी में प्रयोग करने पर पानी अपना रूप बदल कर प्राणवायु (ऑक्सीजन) और उदान वायु (हाईड्रोजन) में परिवर्तित हो जाएगा फिर लिखा गया है: **वायुबन्धकवस्त्रेण निबद्धो यानमस्तके उदान स्वलधुत्वे बिभर्त्याकाशयान कम्।** अर्थात् उदान वायु (हाइड्रोजन) को बन्धक वस्त्र (Air Tight Cloth) द्वारा निबद्ध किया जाए तो वह विमान विद्या (Aerodynamics) के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है। स्पष्ट है कि यह आप के विद्युत बैटरी का सूत्र (Formula for Electric Battery) ही है। साथ ही यह प्रचीन भारत में विमान विद्या होने की भी पुष्टि करता है।

आर्य समाज भीलवाडा का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज भीलवाड़ा के निर्वाचन दिनांक 14/9/14 को सम्पन्न हुए। आर्य वीर दल राजस्थान के कार्यकारी संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री निर्वाचन अधिकारी थे।

प्रधान – विजय शर्मा
उप प्रधान – महावीर दाधीच
मंत्री – अशोक टोडावाल
उपमंत्री – ओमप्रकाश टेलर
कोषाध्यक्ष – द्वारका प्रसाद पण्ड्या
पुस्तकालय अध्यक्ष – शोभालाल विजयवर्गीय
अन्तरंग सदस्य– रामकृष्ण दाता
– शंकर सिंह चौहान
– महेश राठौड़
– कुणाल ओझा

श्रीमद् दयानन्द शिक्षा समिति

अध्यक्ष – दिनेश शर्मा
व्यवस्थापक – सुरेन्द्र आर्य

अच्छी शिक्षा के बिना मनुष्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है। इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मो को छोड़ के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें । - महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

गो दुग्ध उत्पादों के सेवन का संकल्प करें, हो जाएगा गोमाता का पालन

गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय सभी की माता है। हम भारतवासियों में गाय के प्रति अगाध श्रद्धा है। जहां संसार में अन्य लोगों के लिए यह एक पशुमात्र है, वहीं हमारे लिए हमारी धार्मिक सांस्कृतिक आस्था का केन्द्र है। इसका कारण– इसके द्वारा मानव मात्र का किया जाने वाला उपकार है। इसके उपकारी स्वरूप का वर्णन करते हुए वेदों ने इसे **''अघन्या''** कभी भी नहीं मारने योग्य, कहा है। केवल पालन एवं प्रेम करने योग्य। आज भी जब हम पूजा, कथा, यज्ञ और सत्संग में जाते हैं तो वहां अन्त में गोमाता की जय हो, नारा अवश्य लगाते हैं।

किन्तु स्थिति इसके एकदम विपरीत है। नारे हम गोमाता की जय का लगाते हैं परन्तु इसके अमृत तुल्य दूध को छोड़कर भैंस का दूध प्रयोग करना पसन्द करते हैं यह जानते हुए भी गोका दूध और उससे बने पदार्थ मानव शरीर के लिए जितने अनुकूल हैं उतने अन्य के नहीं। विश्व में भारत को छोड़कर दुनिया के किसी भी देश में भैंस का दूध उपयोग में नहीं लाया जाता है। गोमाता की रक्षा हो का जयघोष करने वालों के इस देश में गायों की दुर्दशा अकथनीय है।शहर में सड़कों पर या इधर–उधर गोलियों में भूखी प्यासी फिरती गोमाता को हमने आवारा पशुओं की श्रेणी में पहुंचा दिया। क्या कृतघ्नता के इस पाप से हम कभी मुक्त हो सकते हैं? क्या हमारे गायों के प्रति इस प्रकार के अशोभनीय आचरण के लिए भगवान हमें माफ करेगा?शायद कभी नहीं। गोमाता को इस हाल में पहुंचाने से हम अपने आपको भगवान श्रीकृष्ण के भक्त कहलाने योग्य भी नहीं है।

गोमाता के प्रति यह मेरी श्रद्धा ही थी। युवावस्था में सरकारी सेवा में रहते हुए भी सन् 1966 में गोरक्षा आंदोलन में सम्मिलित होने दिल्ली गया तथा उस समय पुलिस ने गिरफ्तार किया। इस दौरान 3 दिन दिल्ली की तिहाड़ जेल में तथा 27 दिन पंजाब की नाभा जेल में रहा।

यद्यपि यह भी सत्य है कि आधुनिक बदलते परिवेश ने हमारी जीवनशैली और रहन सहन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। आज के शहरी क्षेत्र में जहां रहने के लिए मकान कितनी बड़ी बात है वहां उसमें गोपालन की सोचना मुश्किल है। प्रथम तो शहर के इन घरों में न तो इतनी जगह होती है कि उसमें गायें पाली जा सकें क्योकि गोपालन मात्र गाय के लिए रहने के लिए स्थान की व्यवस्था कर देने से संभव नहीं है। अपितु साथ ही उसके लिए चारे पानी के लिए अपेक्षित स्थान जरूरी होता है। किसी प्रकार बड़े घरों में इन सबकी व्यवस्था हो जाय तो भी गोबर का निस्तारण एक दूसरी बड़ी समस्या है।तो क्या इन सब विषम परिस्थितियों को आधार बनाकर हम गोके प्रति अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जायें और केवल गोमाता जय नारे लगाते रहें। क्या यह उचित होगा?नहीं। नये युग की इन नई परिस्थितियों के अनुरूप हमें अपनी सोच में थोड़ा सा परिवर्तन कर गोपालन के अपने कर्त्तव्य के प्रति नये नजरिये से सोचना होगा।

दो वर्ष पहले मुझे अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में कोटा संभाग के प्रतिनिधि के रूप में हॉलैण्ड जाने का मौका मिला। हॉलेण्ड जो विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। देखा कि वहां गांव या शहर के बाहर गोपालन केन्द्र बने हुए हैं जहां गोपालन किया जाता है। गांव को सभी सुविधाओं का ध्यान रखा जाता है। वैज्ञानिक ढंग से उनके चारे पानी की व्यवस्था की जाती है और वहां जो दुग्ध उत्पादन होता है उसका प्रयोग उस गांव या शहर के निवासी करते हैं और अतिरिक्त दुग्ध अन्य व्यापारिक कार्यों में काम में लिया जाता है। उनसे शिक्षा ग्रहण कर हमारे यहां भी शहरों में निश्चित क्षेत्रों में व्यवस्थित गोपालन केन्द्र बनाये जा सकते हैं। आप कहेंगे कि हमारे यहां भी गोशालाएं बनी हुई है किन्तु सत्य यह है कि हमारे यहां गोशालाओं में जो गायें रहती हैं उनसे दुग्ध उत्पादन नहीं होता है और इन गोशालाओं के संचालन में हमारी स्वयं की भागीदारी न के बराबर ही होती है।

हॉलेण्ड से लौटकर आने पर गायों के प्रति अपने कर्त्तव्यों ने मुझे झकझोरा और एक नई सोच ने जन्म लिया। एक नया विचार पनपा। जहां पहले मेरे परिवार में जिस दूधवाले से दूध आता था वो भी भैंस का। मैंने देखा उसके पास 10–12 भैंस और केवल दो गायें हैं। दृढ़ संकल्प लिया और भैंस का दूध लेना बंद कर उसके स्थान पर गाय का दूध लेना प्रारम्भ किया। जब मैं दूध लेने जाता तो वहां आने वाले दूसरे लोगों को भी मैंने गाय के दूध की वैज्ञानिक गुणवत्ता से अवगत कराया साथ ही गोपालन के प्रति उनके धार्मिक कर्त्तव्य के प्रति समझाया तथा आधुनिक युग में हम उसे किस प्रकार निभा सकते हैं जानकारी दी तो परिवर्तन यह हुआ कि भैंस का दूध लेने वालों ने भैंस का दूध लेना बंद कर गाय का दूध लेना प्रारंभ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जिस दूधवाले के पास पहले केवल 2 गायें थी और 10–12 भैंस वही कुछ महीने बाद गायें 10–12 हो गई और भैंस केवल 2–3 रह गई। और तो और उसने मुझे बताया कि इसमें कुछ गायें तो वो हैं जो सड़कों में यूं ही आवारा घूमती थी जिनका कोई मालिक नहीं था। मैंने उसे प्रण दिलाया कि दूध देना बंद कर देने के बाद वो वापस इन गायों का फिर से आवारा खुली नहीं छोड़ेगा।

इस पूरी घटना को बताने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि हम चाहें तो इस आधुनिक युग में भी अपने गोपालन के धार्मिक कर्त्तव्य का उसी प्रकार से पालन कर सकते हैं। बस जरूरत है तो नई सोच की और दृढ़ संकल्प की। यदि प्रत्येक व्यक्ति चाहे शहरी हो या ग्रामीण सोच ले कि मैं केवल गाय के

जिस व्यक्ति का पुत्र उसके नियंत्रण में हो, जिसकी पत्नी आज्ञानुसार काम करे और जो मनुष्य अपने कमाये हुए धन से सन्तुष्ट हो ऐसे व्यक्ति के लिए यह संसार ही स्वर्ग है। -आचार्य चाणक्य

thearyasamaj.org

दूध का उससे बने दही, घी, पनीर, मावा आदि का प्रयोग करूंगा तो निश्चित रूप से गायों की स्थिति में सुधार होगा। गो दूध का प्रयोग करते समय यह माने कि मैं एक गो का पालन कर रहा हूं। दूध वाले भैंस के स्थान पर गायों का पालन आरम्भ कर देंगे।इससे सड़कों पर आवारा भूखी प्यासी मारी फिरती इन गोमाताओं की दशा में सुधार होगा। और सबसे बड़ी यदि कोई बात होगी तो वह होगी कि गो सेवा और गो रक्षा जो हमारा अनिवार्य धार्मिक कर्त्तव्य है उस ओर यह हमारा एक सार्थक कदम होगा। पाठकों मैं अन्त में राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के शब्दों में अपनी बात कहकर विराम देना चाहूंगा –

दांतों तले तृण दाबकर ये दीन गायें कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही!
– अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस का आयोजन

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल की जयपुर शाखा द्वारा 19 अक्टू. रविवार को प्रात : 8 बजे से 11 बजे तक वैशाली नगर, जयपुर स्थित आर्य समाज भवन में महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस का आयोजन किया गया । प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. रामपाल जी विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में नवसस्येष्टि यज्ञ के साथ आरम्भ हुए कार्यक्रम में बालकों एवं युवाओं के लिए गायन, कविता पाठ, सस्वर मन्त्रपाठ आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई । इस अवसर आचार्य रामपाल जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके ''राष्ट्रीय एकता'' सम्बन्धी विचारों को स्पष्ट व सरल रूप में समझाते हुए कहा कि स्वामी जी ने ''एक भाषा, एक धर्म, एक धर्मग्रन्थ, एक ईश्वर, एक उपासना पद्धति, एक शिक्षा पद्धति '' का मन्त्र इस देश को दिया ।
कार्यक्रम में महिला समाज की सदस्याओं, जवाहरलाल जी वधवा, वंशीधर जी आर्य आदि के द्वारा संगीत की धुनों पर देशभक्ति व भक्ति रस से ओत–प्रोत गीत प्रस्तुत किए गए ।

कार्यक्रम का समापन आर्य समाज , वैशाली नगर के प्रधान डॉ. मोतीलाल जी के अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ हुआ ।
कार्यक्रम के कुशल संचालन के साथ मधुर भजनों की प्रस्तुति आर्य वीर दल के जयपुर जिला संचालक दीपक जी शास्त्री द्वारा दी गई ।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज,भगवती नगर, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) द्वारा प्रसिद्ध वेद–विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री , अमेठी एवं आचार्या डॉ. प्रियम्वदा जी वेदभारती, आर्ष कन्या गुरूकुल, नजीबाबाद, (हरिद्वार) के ब्रह्मत्व में 25 से 31 दिसम्बर, 2014 तक पुरानी अनाज मण्डी, प्रांगण में ''विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ'' का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भजन संगीत एवं वेदपाठ कन्या गुरूकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया जायेगा । 24 दिसम्बर, 2014 को 1 बजे होने वाले ध्वजारोहण एवं कलश यात्रा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि : श्री ज्ञानदेव आहूजा, विधायक, रामगढ़, अलवर; विशिष्ट अतिथि : श्री मानसिंह गुर्जर, विधायक, गंगापुर सिटी , अध्यक्ष : श्री हरिप्रसाद बौहरा, सभापति, नगर परिषद्, गंगापुर सिटी होंगे । दिनांक 28.12.2014 को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर का उद्बोधन का कार्यक्रम भी होगा।दिनांक 31.12.2014 को पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन किया जायेगा । यज्ञ के संरक्षक एवं प्रेरक आर्य वीर दल के संरक्षक पं. मदनमोहन जी आर्य , गंगापुर सिटी होंगे ।

– श्री कृपाशंकर घी वाले , यज्ञ संयोजक

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने हारा है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड असत्य की ओर झुक जाता है। -सत्यार्थ प्रकाश भूमिका

thearyasamaj.org

यज्ञ मीमांसा

यज्ञ अर्थ एवं परिभाषा : यज्ञ शब्द प्राचीन भारतीय संस्कृति (वैदिक संस्कृति) में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । उपनयन से लेकर मृत्यु पर्यन्त मानव जीवन यज्ञमय है। 'यज्ञीय देवपूजा संगतिकरण तथा दान ' – यज्ञदेवपूजासंगतिकरणदानेषु (धातुपाठ भ्वादिगण , धातु सं. 39) अर्थवाली 'यज्' धातु से भाव तथा अकर्तरि कारक में नङ्. – (यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्.,) (पाणिनीय अष्टाध्यायी) प्रत्यय के योग से निष्पन्न होने वाला 'यज्ञ' शब्द अर्थ की व्यापकता लिए हुए है ।

वेदों का समस्त ज्ञान 'यज्ञ' में ही चरितार्थ होता है । वेद में जो कुछ कहा गया है, वह यज्ञ के लिए ही है । वैदिक ज्ञान यज्ञों में ही ओतप्रोत है । अपने से जो बड़े हैं वे देव समान हैं। उनकी पूजा करना यज्ञ है । बराबर वालों के साथ संगति करना और छोटों को कुछ देना भी यज्ञ ही है । यह छोटे – बड़े का भेद मनुष्य मात्र में ही अधिग्रहीत नहीं करना चाहिए प्रत्युत् संसार के प्रत्येक पदार्थ में ऐसा व्यवहार होना चाहिए, यदि वह बड़ा है तो पूजनीय है, यदि बराबर वाला है तो मिलने योग्य है और यदि छोटा है तो कुछ पाने योग्य है । उक्त त्रिविध व्यक्ति हमसे पूजा, संगति और दान पाने के अधिकारी हैं । इस प्रकार से समस्त जड़ और चेतन जगत् को परस्पर लाभ पहुँचाना ही यज्ञ है । यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है । **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म** ' (शतपथ ब्राह्मण : 1.7.4.5) अर्थात् जितने श्रेष्ठतम कर्म हैं , सब यज्ञ ही हैं । इन यज्ञों के तीन विभाग हैं – कर्मयज्ञ , ज्ञानयज्ञ और उपासना यज्ञ । सोलह संस्कार, शिक्षा, आहार, वस्त्र, गृह, समाज, कृषि – पशुपालन, संगीत, ज्योतिष, गणित, भूगोल, वैद्यक, रसायन, इमारत, यन्त्र, शस्त्र , वाहन और युद्ध विद्या आदि पदार्थ और विद्याएं कर्मयज्ञ से सम्बन्ध रखती हैं । ईश्वर, जीव , पुनर्जन्म, कर्मफल, सृष्टि, प्रलय, वर्ण, आश्रम और स्वाध्याय आदि ज्ञान यज्ञ से सम्बन्ध रखते हैं । सदाचार, प्रेम, दया, श्रद्धा दर्शन, भक्ति, योग वैराग्य आदि क्रियाएं उपासना से सम्बन्धित हैं। इन्हीं तीनों में वेद का लौकिक – पारलौकिक ज्ञान चरितार्थ होता है ।

यज्ञ पर प्रकाश डालते हुए शतपथ ब्राह्मण का मन्तव्य यज्ञ के द्विविध रूप से है, प्राकृत और कृत्रिम यज्ञ । प्राकृत यज्ञ प्रकृति में निरन्तर चल रहा है । सृष्टिकर्त्ता ने स्वयं एक शाश्वत यज्ञ का दिव्य आयोजन कर रखा हैं ।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चके वायव्यारण्या ग्राम्याश्च ये ।।

– यजु. 31 / 7,10

कालान्तर में उसी के अनुसार कृत्रिम यज्ञों की संकल्पना की गई । वस्तृतः सतत क्रियाशील–सृष्टि की सृजन विद्या ही यज्ञ का मूल है । अतः जो यज्ञ संहिताकाल में देव–स्तुति का साधन मात्र था, अब ब्राह्मणकाल में उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म विषयों पर गहन तात्त्विक चिन्तन आरम्भ कर , उसे वैज्ञानिक एवं परम् साध्य बना दिया, जिसका श्रेय शतपथ को जाता है । कृत्रिम यज्ञ की परिभाषा में निरूक्तकार यास्क लिखते हैं कि यजनार्थक होने के कारण, फल विशेष की कामना से अनुष्ठेय, यजुर्मन्त्रों से युक्त और उनके द्वारा सफलीभूत होने के कारण यज्ञ कहलाता है ।

यज्ञः कस्मात् । प्रख्यातं यजति कर्मेति नैरूक्ताः
यांज्ञो भवतीति वा यजुसन्नो भवतीति वा यजुष्वेनं नयन्तीति वा ।

– निरूक्त – 3 / 4

यास्क की उक्त परिभाषा में यज्ञ के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्ष स्पष्ट हो जाते हैं ।

यज्ञ शब्द के अन्य अर्थ (पर्याय) : माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में 'यज्ञ' शब्द के लगभग 100 पर्याय शब्द प्राप्त होते हैं । कुछ प्रमुख प्रतीकार्य द्रष्टव्य हैं ।

1. वाग्वै यज्ञः (माध्यन्दिन शतपथ 1.1.2.2) : वाक् ही यज्ञ है । वाक् संयम का अर्थ है– समुचित पदो के सन्निधान से संयत वाणी का प्रयोग । वाणी के नियमन से सभी मानस दोष दूर हो जाते हैं । ये ही दोष यज्ञ के विनाशक हैं। यज्ञों में स्वाहाकार के द्वारा आहूतियाँ दी जाती हैं, जिससे यजमान आत्मा में यज्ञीय भाव को धारण करता है। स्वाहा का अर्थ है – 'वाक् संयम' । **" सु + आह स्वा वाक् आहेति वा स्वं प्राहेति ,स्वाहुतं हविर्जुहोतीति"** अर्थात् शुभ कहता है अपनी वेदवाणी कहती है, अपने को जानने के लिए अपने तक कहता है अथवा शुभ आहुति के अभिप्राय से हवि का होम करता है । ये ही स्वाहाकार रूप यज्ञ के चार अर्थ हैं । सार्वभौम – लोकहितकारी कर्मों के मूल में सुनृत वाक् ही छिपी है। यह हित करते समय साधुजन प्रायः खलवचनों का सहर्ष गरलपान कर मधुरप्रिय कामदुधा वाणी से अमृत वर्षा करते हैं । यही तो उनका वाग्यज्ञ है।

2. विराड् वै यज्ञः (मा. शतपथ 1.1.1.22) : विशेष रूप से प्रकाशमान व्यापक तत्त्व को विराट् कहा जाता है । यज्ञ भी बाह्याभ्यन्तर से प्रकाशक होने से विराट् जाना गया है। "विशेषेण राजते" इति विराट् । विराट् आकाश , विराट् सूर्यमण्डल, सर्वान्तर्यामी विराट् परमेश्वर – ये सभी विराट् हैं । परोपकारमय यज्ञ कर्म भी सर्वहितकारी होने से असीम अनन्त फलवाला है। अतः विराट् वै यज्ञः कहकर यज्ञ की पूर्णता और उसके आत्यन्तिक लाभ को प्रकट किया है । यज्ञ फल सर्वदा सूक्ष्म से स्थूल, लघुत्तम से महत्तम तथा सीमा बन्धनों का अतिक्रमण कर अव्यावहारिक की ओर बढ़ जाता है । यही विराट् यज्ञ का माहात्म्य है।

3. यज्ञो वै विष्णुः (मा.श. 1.1.2.13) : अर्थात् यज्ञ व्यापक विष्णु का द्योतक है। ' व्यापन' सामान्य गुण से ही इसे विष्णु कहा है। यज्ञो वै विष्णु (मा. शत. 1.7.1.21) **स च त्रयय्यात्मना व्यापित्वात् विष्णु** : – तीनों लोकों में ; भूः – पृथिवी, भुवः – अन्तरिक्ष, स्वः –लोक वेद, त्रयी में, कालत्रय में यज्ञ की व्यापकता होने से उसे विष्णु कहा गया है ।

– डॉ. सुधीर शर्मा ,

स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था, यह आर्य समाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाडी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया, अगर आर्य समाज न होता तो भारत, भारत न होता -अटल बिहारी वाजपेयी

thearyasamaj.org

आर्य जगत् समाचार

टंकारा श्री अरूणा सतीजा राज्य सरकार द्वारा सम्मानित

आर्य बहिन श्रीमती अरूणा सतीजा को राजस्थान सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, श्रीफल एवं शाल ओढाकर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के मंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी जी द्वारा सम्मानित किया गया है । 1 अक्टूबर, 2014 को राज्य स्तरीय वृद्धजन समारोह का भव्य आयोजन पिंकसिटी प्रेस क्लब जयपुर में उत्साह पूर्वक किया गया ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रतिनिधि उनके सम्मान को सम्मानित करते हुए गर्व अनुभव करते हैं।

डॉ सुधीर शर्मा

वैदिक विधि से अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ सम्पन्न

जयपुर : स्थानीय गोबिन्दपुरी – रामनगर (सोडाला) में तीन दिवसीय अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 28.9.14 को हुई । डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में वेदपाठ पं. भगवान सहाय विद्या –वाचस्पति, डा. सन्दीपन आर्य एवं श्रीमती श्रुति शास्त्री द्वारा हुआ । आयोजन के प्रत्येक सत्र में मधुरता का संचार बिजनौर (उ.प्र.) के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री टीकम सिंह आर्य के भजनों से हुआ । विशेष उल्लेखनीय है कि गोबिन्दपुरी बस्ती में आर्य समाज की पहुँच नहीं है , फिर भी निवासियों ने वैदिक कर्म काण्ड के प्रति श्रद्धा एवं अपूर्व उत्साह दिखाया जिसके श्रेय के पात्र हैं अजमेर डी.ए.वी. संस्था के पूर्व प्रोफेसर डॉ. कृष्ण पाल सिंह। यज्ञ में कन्धे से कन्धा मिलाया उत्साही कर्मठ श्री रघुनन्दन बंसल तथा राजेन्द्र आर्य ने । समारोह का समापन ऋषि लंगर के साथ हुआ ।

– ईश्वर दयाल माथुर , सिद्धान्त भास्कर

आर्य समाज नींदड़ (जयपुर) का 47 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नींदड़ (जयपुर) का 47वां वार्षिकोत्सव 3 से 5 अक्टूबर तक पाँच सत्रों में सम्पन्न हुआ । प्रत्येक सत्र में यज्ञ–भजन एवं विद्वानों के प्रवचन हुए । डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में वेदपाठ डॉ. सन्दीपन आर्य व श्रुति शास्त्री ने किया । इस अवसर पर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक टीकम सिंह आर्य एवं स्थानीय श्री जवाहर लाल वधवा तथा मेहरा दम्पति के सुमधुर हुए । पूर्णाहुति सत्र को श्री एम. एल. गोयल (पूर्व प्राचार्य डी.ए.वी.) , अशोक शर्मा (वर्तमान प्राचार्य डी.ए.वी.) , डॉ. कृष्णपाल सिंह (पूर्व संस्कृत व्याख्याता डी.ए.वी. अजमेर) व सी. एम. शर्मा नगर पार्षद ने संबोधित किया । नींदड़ आर्य समाज के प्रधान पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति ने संस्था की स्थापना एवं प्रगति विवरण प्रस्तुत किया।

मंच संचालन व्यवस्था डॉ. संदीपन एवं व्यवस्था की कमान डॉ. कृष्णपाल सिंह के पास रही । नगर के सभी आर्य समाजों तथा बाहर के आर्य समाजों का भी प्रतिनिधित्व रहा । ऋषि लंगर के साथ समारोह विसर्जित हुआ ।

डॉ सन्दीपन

आर्य समाज, कोटपूतली द्वारा मनाया गया बलिदान दिवस

दीपावली पर्व के अवसर पर आर्य समाज कोटपूतली द्वारा स्थानीय नगरपालिका पार्क में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 131 वां बलिदान दिवस मनाया गया । इस अवसर पर आर्य सन्यासी स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया । यज्ञ के उपरान्त आध्यात्मिक सत्संग एवं विद्वानों के उद्‌बोधन हुए । आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता श्री अशोक जी आर्य ने आर्य समाज के पूर्व मंत्री एवं प्रसिद्ध भामाशाह श्री गुलजारी लाल जी मोरीजा वाले के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोटपूतली के प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता श्री बनवारी लाल यादव तथा श्री मुकेश गोयल ने भाग लिया ।

आर्य समाज एवं आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं ने स्थानीय उद्यान एवं चिकित्सालयों में सफाई का कार्य कर स्वच्छ भारत के निर्माण हेतु अपनी प्रतिबद्धता दिखाई । कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के मंत्री श्री रमेश कुमार आर्य ने सभी का धन्यवाद किया ।

–रमेश कुमार आर्य ,मंत्री , आर्य समाज कोटपूतली ।

शिक्षकों को अपने अनुयायियों में खोज, रचनात्मकता, उद्यमिता और नैतिक भावना भरने को कार्य करना चाहिए। शिक्षक को अपने शिष्यों का आदर्श बनना चाहिए और इसके लिए उसे एक समर्पित और अनुशासित जीवन जीने की जरूरत होती है -एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

thearyasamaj.org

वैदिक वीरांगना दल द्वारा गोरक्षा एवं दीपावली मिलन समारोह का आयोजन ।

वैदिक वीरांगना दल द्वारा दिनांक 27 अक्टू., को संस्था कार्यालय बी – 123, मालवीय नगर, जयपुर में श्रीमती रमा गुप्ता की अध्यक्षता में गोरक्षा एवं दीपावली मिलन समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर दल की राष्ट्रीय अध्यक्षा सुश्री अनामिका शर्मा ने गौ दुग्ध एवं इससे बने पदार्थों की गुणवत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए । मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित श्रीमती दुर्गा शर्मा ने गौदुग्ध एवं पंचगव्य चिकित्सा की उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला । कार्यक्रम में भूतपूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री गोस्वामी जी , श्रीमती किरण बंसल एवं श्रीमती शारदा ने भी विचार व्यक्त किए ।

उक्त सम्मेलन में शहर के लगभग सभी वार्डों से महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया । इस अवसर पर श्री नवल चन्द डागा के सहयोग से सचित्र प्रदर्शनी भी लगायी गयी । गौरक्षा के संकल्प के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

– अनामिका शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्षा

महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी को मिला प्रथम पुरस्कार

नगर निगम, कोटा की ओर से आयोजित राष्ट्रीय दशहरा मेला कोटा – 2014 के धार्मिक प्रदर्शनी वर्ग में वेद प्रचार समिति एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा , कोटा की ओर से महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन एवं वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गई । जिसमें महर्षि के जीवन चरित्र की प्रदर्शनी के साथ – साथ बैनर , चित्र, पोस्टर आदि के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति, जल बचाओ, वृक्ष बचाओ, कन्या भ्रूण हत्या रोकने जैसे सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक किया ।

मेले के समापन पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती रत्ना जैन, महापौर, नगर निगम कोटा एवं मुख्य अतिथि श्री प्रेम प्रकाश, आयकर आयुक्त द्वारा आर्य समाज की प्रदर्शनी को प्रथम स्थान प्रदान कर प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया । और समाज के मेले में किये गए कार्यों की सराहना की ।

–प्रभु सिंह कुशवाह मंत्री महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय , हरिद्वार में मनाया ''राष्ट्रीय एकता दिवस''

हरिद्वार। ''सरदार बल्लभ भाई पटेल की समझ और उनके प्रयास से ही आज भारत एक सूत्र मे पिरोया हुआ देश है। यदि पटेल जैसा व्यक्तित्व देश में न होता तो आजादी के बाद भी देश बटा हुआ होता।'' गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दयानंद स्टेडियम में आयोजित राट्रीय एकता दिवस के अवसर पर एकता दौड़ को प्रारम्भ करते हुए हरिद्वार के संसद सदस्य डॉ0 रमेश पोखरियाल निशंक ने उक्त बात कही। उन्होंने कहा कि पूरे देश दुनिया में सुख–शांति और भाईचारे के लिए एकता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सद्प्रयास से आज भारत में अनेक दल होते हुए भी सब एकता के लिए दौड़ रहे हैं। कुलपति डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि 31 अक्टूबर सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस को एकता के रूप में मनाने के लिए हमें प्रधानमंत्री मोदी की सराहना करनी चाहिए। यह विश्वविद्यालय पहले से ही देश की अखंडता और एकता के लिए प्रयासरत रहा है।एकता दौड़ कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अजय मलिक ने किया।

इसके अतिरिक्त एकता दौड़ तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कन्या गुरुकुल देहरादून तथा हरिद्वार के परिसरों में भी किये गए। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों ने देश भक्ति की कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिता आदि का आयोजन भी किया।

डॉ0 प्रदीप कुमार जोशी, जनसंपर्क अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

मेरी सफलता इस बात में नहीं है कि ए या बी मेरे बारे में क्या सोचता है। मेरी सफलता इस बात में है कि मैं अपने काम में क्या कर दिखाता हूं। शिक्षा इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करती है। - होमी जहांगीर भाभा, वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आवश्यक सूचना

- आर्य मार्तण्ड के समस्त सदस्यों, पाठकों से निवेदन है कि अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं, कार्यक्रम आदि की विज्ञप्तियां, लेख, सूचनाएं अधिक से अधिक संख्या में ई–मेल करें, अथवा अग्रलिखित पते पर भेजें **डॉ सुधीर शर्मा, 42 मुक्तानंद नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018**
- कृपया अपनी सूचनाएं, लेख,सुझाव,विचार,रचनाएं, समाचार आदि सभी हिन्दी फोन्ट "DevLys 010" में ही टाइप करके **aryamartand@gmail.com, dr.sudhrisharma@yahoo.com**पर ई–मेल करें
- आर्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री के लिफाफे के ऊपर अथवा पत्र के ऊपर "प्रकाशनार्थ" अवश्य लिखें ।

– सम्पादक

प्रतिक्रिया

आदरणीय श्री अमरसिंह आर्य ,
सम्पादक, आर्य मार्त्तण्ड ।

नमस्ते ।

आर्य मार्तण्ड का अंक 24 (21.9.14 – 5.10.2014) प्राप्त हुआ , आभार । प्रभावोत्पादक पठन–सामग्री के कारण अंक का विशेष महत्त्व है। सर्वोपरि आलेख " गायत्री मन्त्र–विवेचन " सुग्राह्य भाषा में गायत्री मन्त्र का स्वरूप और महत्व विभिन्न ग्रन्थों और मनीषियों की टिप्पणी सहित एक पटल पर है ।
विद्वान् लेखक डॉ. सुधीर शर्मा के प्रस्तुतिकरण का साधुवाद ।

आशा है भविष्य में भी डॉ. सुधीर शर्मा के ज्ञान–निचय से आर्य जगत् लाभान्वित होता रहेगा ।

धन्यवाद ।

– ईश्वर दयाल माथुर
हिन्दी साहित्यकार–पत्रकार , जयपुर ।

आगामी कार्यक्रम : नव. 2014

- गुडगांव 15 सेक्टर पार्ट –2 स्थित आर्य समाज के 11 वें वार्षिकोत्सव का 19–23 नव. , 2014 तक विदुषी सविता आर्या एवं भजनोपदेशक श्री बच्चू सिंह जी , मथुरा वाले के सान्निध्य में आयोजन होगा ।
- आर्य समाज फिरोजपुर , झिरका, हरयाणा, का वार्षिकोत्सव 5–9 नव., 2014
- वार्षिकोत्सव 17 –23 नव. , 2014 ,पुन्हाना कस्बा, हरयाणा
- 26–30 नव. , 2014 नगीना में वेदकथा का विदूषी सविता आर्या एवं भजनोपदेशक श्री बच्चू सिंह जी , मथुरा वाले के सान्निध्य में आयोजन ।
- 5 – 12 नव. , 2014 को आर्य समाज व आर्य वीर दल कोटपूतली द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में वेद प्रचार एवं यज्ञ ।
- 9 नव., 2014 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल , जयपुर जिला की स्थानीय इकाईयों द्वारा आर्य समाज, वैशाली नगर, जयपुर ; कोटपूतली, किशनगढ़–रेनवाल और बगवाड़ा – चौंप में "मासिक आर्य वीर सम्मेलन एवं विचार गोष्ठीयों" का आयोजन । समस्त कार्यक्रम का संयोजन श्री दीपक शास्त्री , जयपुर जिला संचालक द्वारा किया जायेगा ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष - आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।